ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर। सामवेद 971
हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर।

O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotces.

वर्ष 38, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 नवम्बर, 2014 से रविवार 16 नवम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामन्त्री, आर्यसमाज के सेवा कार्यों की प्रतिमूर्ति, वनवासी अंचलों में आर्य शिक्षा केन्द्रों की संचालिका, आजीवन सेवाव्रती, आदिवासी क्षेत्रों में सर्वप्रिय

माता प्रेमलता शास्त्री जी का देहावसान : आर्यजगत् में शोक

अपार जनसमूह ने दी पार्थिव शरीर को अश्रुपूर्ण विदाई

90 वर्ष की आयु में अन्तिम दिन तक आर्यसमाज की सेवा - याद रखेगा आर्यसमाज का इतिहास : महाशय धर्मपाल

सारा जीवन शरीर से किया सेवा का कार्य जाते-जाते नश्वर शरीर को भी दे दिया समाज कल्याण के लिए दान

तीसरी पीढ़ी की अग्रणी आर्यकार्यकर्त्री थी माता प्रेमलता शास्त्री : निधन से आर्यसमाज की क्षति - प्रकाश आर्य

अद्भुत थी सोच - अपने पति आर्यनेता स्व. पृथ्वीराज शास्त्री जी के निधन पर लिया हुआ संकल्प जीवन भर निभाया

आर्य जगत की महान विभूति, सेवा के द्वारा वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा, संस्कार एवं वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाली माता प्रेमलता शास्त्री जी का हृदयगति रुकजाने से शनिवार, 1 नवम्बर 2014 को दिल्ली में 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। अकस्मात एक दिन पूर्व शारीरिक अस्वस्थता के कारण माता प्रेमलता जी को अग्रसेन अस्पताल, पंजाबी बाग दिल्ली में भर्ती किया गया था। माता जी के पीछे परिवार में पुत्र, पौत्र-पौत्रियाँ तथा अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ का सम्पूर्ण परिवार, गुरुकुल-कन्या गुरुकुल, छात्रावास, बालवाड़ियाँ, विद्यालय तथा आश्रमों को छोड़ गई।

माता जी ने अल्पसमय में ही अपनी कार्य कुशलता

माता प्रेमलता शास्त्री जी के कार्यों को आगे बढ़ाना ही सच्ची श्रद्धांजलि - राजीव आर्य

का परिचय देते हुए अपने पति स्व. पृथ्वीराज शास्त्री जी के सभी कार्यों को संभाल लिया था। हृदय में समाज में व्याप्त कुरीति, ढोंग, पाखण्ड, आडम्बर को मूल से उन्मूल कर आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्र में स्थित जनजातियों को उच्चस्थान प्रदान कराकर उन्हें वेदपढ़ने का अधिकार दिलाने की भावना प्रबल थी।

पूज्या माता प्रेमलता शास्त्री जी करूणामयी वेदोपासिका, समाज के कार्यों को करने में निर्भया, कृतसंकल्पा, परोपकारिणी तथा क्षमावती थी। जिस

- शेष पृष्ठ 6 पर

पूर्वोत्तर भारत एवं वनवासी क्षेत्रों में ओ३म् ध्वज लहराने वाली माता प्रेमलता शास्त्री जी हमारे लिए प्रेरणास्रोत- जीववर्धन शास्त्री

आर्य महासम्मेलनों की शृंखला में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2014 सिंगापुर एवं बैंकॉक में सम्पन्न

सिंगापुर में आर्यसमाज के 100 वर्ष पूर्ण होने पर यह आयोजन होना हमारे लिए दोगुनी प्रसन्नता की बात
- ओ. पी. राय, प्रधान, आर्य समाज सिंगापुर

92 वर्षों में पहली बार इतना भव्य आयोजन हुआ बैंकॉक में : कार्य में होगी वृद्धि थाईलैंड में
- शिवेन्द्र प्रताप सिंह, प्रधान आर्यसमाज बैंकॉक

विस्तृत समाचार अगले अंक में

॥ ओ३म् ॥
महर्षि दयानन्द सरस्वती
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में
आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली
के अन्तर्गत समस्त
आर्य शिक्षण संस्थाओं का सामूहिक विचारोत्सव

कल, आज और कल
21 नवम्बर, 2014 (शुक्रवार)
यज्ञ : प्रात: 9 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रात: 9:30 से 1:30 बजे
स्थान : तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

संस्कार चैनल पर सीधा प्रसारण प्रात: 9:30 से 1:30 बजे
आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थाएं एवं आर्यजन सीधा प्रसारण देखें तथा अपने परिचितों एवं मित्रों को एस.एम.एस. भेजकर सूचित करें।

वेद-स्वाध्याय

आयुर्यज्ञेन कल्पताम्

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳश्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। प्रजापतेः प्रजाऽअभूम स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम्।।

यजुर्वेद : अध्याय ९ मन्त्र २१

अर्थ— हे मनुष्यो! तुम्हारी (**आयुः**) अवस्था (**यज्ञेन**) ईश्वर की आज्ञा-पालन से निरन्तर (**कल्पताम्**) समर्थ होवे (**प्राणः**) जीवन का हेतु बलकारी प्राण (**यज्ञेन**) धर्मयुक्त विद्याभ्यास से (**कल्पताम्**) समर्थ होवे (**चक्षुः**) नेत्र (**यज्ञेन**) प्रत्यक्ष विषय के शिष्टाचार से (**कल्पताम्**) समर्थ हो (**श्रोत्रम्**) कान (**यज्ञेन**) विद्याभ्यास, वेदाध्ययन से समर्थ हो और (**पृष्ठम्**) पूछना (**यज्ञेन**) परस्पर के सम्वाद से समर्थ हो (**यज्ञः**) यज धातु का अर्थ, यज्ञक्रिया (**यज्ञेन**) ब्रह्मचर्यादि के आचरण से (**कल्पताम्**) समर्थित हो, जैसे हम लोग (**प्रजापतेः**) सब के पालने हारे ईश्वर की (**प्रजा अभूम**) प्रजा होवें वैसे तुम भी होओ। हम यज्ञादि से श्रेष्ठ बन (**देवाः**) विद्वान् हुये (**अमृता अभूम**) जीवन-मरण के बन्धन से छूट (**स्वरगन्म**) मोक्ष प्राप्त करें वैसे ही तुम भी मोक्ष-सुख को प्राप्त करो।

यह मन्त्र मानव-जीवन को सम्पूर्ण रूप में यज्ञमय बनाने का सन्देश दे रहा है। वह परमात्मा स्वयं यज्ञस्वरूप है। (तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे) यज्ञमय पुरुष से ही चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ। ऐसे परम पुरुष की पूजा भी यज्ञ से करनी चाहिये—'**यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः** (यजुः० ३१.१६)'। हमें सर्वप्रथम अपना जीवन यज्ञमय बनाना होगा तभी हम उसकी प्रजा बनने का अधिकार प्राप्त कर सकेंगे और तभी हमारा सुख-विशेष एवं मोक्ष-प्राप्ति का उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

आयुर्यज्ञेन कल्पताम्—हे मनुष्यो! तुम्हारी आयु ईश्वर की आज्ञा-पालन में लगे। ईश्वर की आज्ञा वेदों में सन्निहित है। वेद मानव की पहली आचार-संहिता और सृष्टि का पहला संविधान है जिसने सौ वर्षों तक निष्काम भाव से कर्म करने का आदेश दिया है। (यजुः० ४०.२)। ऋग्वेद का अन्तिम संगठन सूक्त इस विषय का बहुत महत्त्वपूर्ण सूक्त है जिसमें मिल कर रहने का सन्देश दिया है। जो वेद में कहा है उसे करना धर्म और जिसका निषेध किया है उसे अधर्म जान कर उसका परित्याग कर देना चाहिये।

''**आयुर्यज्ञेन कल्पताम्**'' का यह भी भाव है कि हमें जीवन भर निष्काम भाव से कर्त्तव्य-कर्मों को करना चाहिये। बड़ों का आदर, पदार्थों के गुण-धर्म जान उनकी संगति करना और दान देना ये जीवन के आदर्श हैं। मनीषियों ने इसीलिये पञ्चयज्ञों का प्रत्येक गृहस्थ के लिये विधान किया है। हम यज्ञशेष का भोजन करें। जो केवल अपने लिये ही भोजन पकाता है वह (केवलाघो भवति केवलादी) पाप का ही भक्षण करता है।

'छान्दोग्योपनिषद्' (३.१६.१) में मानव-जीवन की यज्ञ से उपमा दी है। यह मानव-जीवन ही यज्ञ है। जिसका २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य-पालन करना और कम से कम एक वेद को पढ़ना मानो प्रातः कालीन यज्ञ है। छत्तीस वर्ष तक ब्रह्मचारी रहना माध्यन्दिन सवन और अड़तालीस वर्ष तक गुरु के पास रहते हुये चारों वेद एवं वेदांगों को पढ़ना सायं सवन जानना चाहिये। ऐसे ब्रह्मचारी की आदित्य संज्ञा है जो सूर्य के समान सर्वत्र ज्ञान के प्रकाश से सबको प्रकाशित करता है।

प्राणो यज्ञेन कल्पताम्—आयु तो है परन्तु प्राणशक्ति की न्यूनता है तो भी जीवन निरर्थक जान पड़ता है। जिसके शरीर में प्राणशक्ति का आधिक्य है वही समाज में नेता वक्ता और मार्गदर्शक बनता है। **तेजो यस्य विराजते स बलवान् स्थूलेषु कः प्रत्ययः।** जिसमें ओज-तेज की प्रधानता है वही शक्तिशाली है। किसी स्थूलकाय को देखकर यह उतना ही बलवान् भी होगा यह निश्चय नहीं किया जा सकता।

प्राण का स्रोत सूर्य है। सूर्य की किरणों से यही प्राण ऊर्जा बादल की बूंदों में और फिर वर्षा द्वारा ओषधियों, वनस्पतियों में आती है। यही वायु के आक्सीजन रूप में हमें श्वास लेते समय प्राप्त होती है। यहां ''**प्राणो यज्ञेन कल्पताम्**'' का अभिप्राय यही है कि हम प्रतिदिन प्राणशक्ति को प्राप्त करने के लिये प्राणायाम करें। प्रातःकालीन सूर्य की किरणों में सूर्यनमस्कार, आसन, व्यायाम, तेल मालिश करना प्राणशक्ति को बढ़ाने में बहुत उपयोगी है। ऐसे ही खाद्य पदार्थों में शाकाहार का सेवन और उन्हें कम से कम तलना या पकाना चाहिये।

हमारे शरीर की अन्तिम धातु रज-वीर्य को भी प्राण कहते हैं। यह सारे शरीर का सारतत्त्व है। इसकी रक्षा के लिये धर्मयुक्त विद्याभ्यास और सदाचार का पालन करना चाहिये।

चक्षुर्यज्ञेन कल्पताम्—शिष्टाचार **मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्। आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः** से समर्थ होवे।

श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताम्—कान अच्छी बातों के सुनने, दूसरों की निन्दा—चुगली न सुनने और वेदाभ्यास से पवित्र होवें। **भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः।** साम० १८७४।

पृष्ठं यज्ञेन कल्पताम्—विद्या पढ़ते समय या किसी विषय में कुछ जानने के लिये विनम्रतापूर्वक परस्पर संवाद होवें।

यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्—यह हमारा यज्ञ रूप उत्तम कार्य भी यज्ञिय भावना से ओत-प्रोत होना चाहिये। हम निष्काम भाव से यज्ञ को करें। ''**इदन्न मम**'' यही बतलाता है।

जब हम मन, वचन, कर्म से यज्ञमय हो जाएँगे तब हमें समस्त जड़-चेतन के स्वामी की प्रजा बनने का अधिकार प्राप्त हो जाएगा **प्रजापतेः प्रजा अभूम** का यही अभिप्राय है।

स्वर्देवा अगन्म—[अयं यज्ञो देवयाः] यज्ञ देवत्व को प्राप्त कराता है। यज्ञ से देवत्व को प्राप्त होकर अखण्ड सुख, मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसीलिये शास्त्रकारों ने कहा—**स्वर्गकामो यजेत।** सुख-विशेष की प्राप्ति के लिये यज्ञ करना चाहिये।

अमृता अभूम—

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ यजुः० ३१.१६

विद्वान् लोग धारणा-ध्यान रूप योगाभ्यास से यज्ञमय पुरुष की उपासना कर पहले मुक्त हुये विद्वानों के समान मुक्ति को प्राप्त करते हैं। - *क्रमशः*

"ईश्वर सत्य स्वरूप है : महर्षि दयानन्द सरस्वती"

ईश कृपा से मोक्ष से लौटकर सदियों बाद इस धरती पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म हुआ। उन्होंने वेदानुसार ईश्वर का सत्य स्वरूप व रचना को संसार के समक्ष प्रस्तुत किया। महाभारत काल के बाद अट्ठारहवीं शताब्दी में इस महापुरूष ने जन्म लिया। आर्य समाज की स्थापना करके, उसके सार्वभौम दस नियम बनाये, उसमें दूसरे नियम में ईश्वर का सत्यस्वरूप बतलाया गया है। आइए संक्षेप में विचार करते हैं-

आर्य समाज का दूसरा नियम- ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामि, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता हैं, उसी की उपासना करनी योग्य है।

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽ र्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। (यजुर्वेद)

ईश्वर सर्वव्यापक है, जगत् का उत्पादक है, शरीर रहित है, शारीरिक विकार रहित है, सूक्ष्मदर्शी है, नाड़ी और नस के बन्धन से रहित है, कवि है, ज्ञानी है, पाप से रहित है, स्वयम्भू है, अनादि है, प्रजा के लिए ठीक-ठीक कर्मफल का विधानकर्ता है। हमारे चारों ओर ऊपर-नीचे आगे-पीछे विद्यमान है और सम्पूर्ण सृष्टि को नियमित चला रहा है। गृह उपग्रह सम्पूर्ण अन्तरिक्ष को संचालित कर रहा है तथा ऋतुओं का निर्माण प्राणी मात्र के हित के अनुसार करता है और प्राणियों को जीवित रखने के लिए वायु, अग्नि, जल, अन्न इत्यादि पदार्थ निःस्वार्थ भाव से देता है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति। सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विजगुप्सते।।

अर्थात् जो कोई सम्पूर्ण चराचर जगत को परमात्मा में ही देखता है, वह कभी भी निन्दित नहीं होता है और परमात्मा के नौ गुण सदा मन में रखता है। वह सदैव, शाश्वत सुख को प्राप्त होता है।

ईश्वर के नौ गुण- 1. ईश्वर सर्वदेशी है। 2. ईश्वर एकत्व है। 3. ईश्वर शुक्रम् है। 4. ईश्वर शुद्धम् है। 5. ईश्वर अपापविद्धम् है। 6. ईश्वर कवि है। 7. ईश्वर मनीषी है। 8. ईश्वर स्वयंभूः है। 9. ईश्वर फलदाता है।

ईश्वर का स्वरूप- परमात्मा निराकार सच्चिदानन्द है। वह घट-घट कण-कण में व्यापक है और अपनी महती शक्ति से सारे संसार का पालन संचालन स्थिति, उत्पत्ति कर रहा है।

ईश्वर की रचनायें- ईश्वर ने सृष्टि की रचना अद्भुत की है और सूर्य, चन्द्रमा, तारे व सारे ब्रह्माण्ड को बिना किसी सहारे के अपनी शक्ति से चला रहा है व स्थिर किये हुए है। देखिए- सूर्य पृथ्वी से 9 करोड़ 30 लाख मील दूर है। चन्द्रमा पृथ्वी से 2 लाख चालीस हजार मील दूर है और निरन्तर बिना सहारे के अपनी धूरी पर घूमते रहते हैं, किन्तु आश्चर्य है कि दूरी घटती-बढ़ती नहीं है।

चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा 27 दिन 7 घण्टे 56 मिनट और 12 सेकेन्ड में पूरी करता है। पृथ्वी अपनी धूरी पर 23 घन्टे 56 मिनट और 9 सैकेण्ड में घूमती है और प्रति सैकेण्ड में 18 मील सूर्य की परिक्रमा करती है और अपनी धूरी पर 1036 मील प्रति घण्टा की रफ्तार से घूमती है।

सूर्य का व्यास- 8 करोड़ 58 लाख 85 हजार मील है और प्रकाश की किरण पृथ्वी पर 8 मिनट में पहुँचती है।

सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है- जो अपनी धूरी पर 9 घण्टे 55 मिनट में घूमता है और 333 दिन में सूर्य की परिक्रमा करता है। सूर्य जलता हुआ अग्नि का पिण्ड है। इसकी सतह का तापमान 12000 डिग्री सेन्टीग्रेट है और दूरी इतनी है कि तापमान सामान्य बना रहता है। अगर एक बाल के बराबर भी सूर्य पृथ्वी के नजदीक आ जाए तो पृथ्वी जलकर

- शेष पृष्ठ 8 पर

Vedas: The Origin of Material and Spiritual Sciences

Dr. Sunder Lal Kathuria, D.Litt.
[Former Prof. & Head, Hindi Deptt., Bhavnagar University,Gujarat]

Vedas are not only a book of religious preachings and ritual practices, but most ancient encyclopedia, the ocean of knowledge. 'Veda' primarily means knowledge based on logic and universal truth. Science also means knowledge to do wonders. Scientific inventions are based on experiments. They ease human life and reduce efforts. The ultimate result of scientific conclusion is also universal and logical. On this point Veda and Science are two sides of the same coin. But generally we take Veda and Science as opponents – two shores of the ocean. Some western thinkers and a few scientists take it for granted that Vedas are only religious books based on blind faith, having no scientific outlook; but it is totally wrong. When we talk of science, we keep in mind only western material science, but Vedas being the wisdom of Supreme Authority are rare combination of material as well as spiritual sciences.

Darwin's theory of evolution was a turning point in the history of science. According to Darwin, the origin and main cause of matters is **Ether**. This Universe came into existence with the help 0f **Ether** and **Amiba**. Darwin's theory denies the existence of any Supreme Power as the creator of Universe. It has no faith in Soul, in 'Karma' [deeds] theory or in incarnation. Darwins think that religion is "superstition, a morbid sentiment or a fase of hysteria''. [Science and Religion, p.4-5] The matter can either be solid, liquid or in gaseous form. The origin of material science is Darwin's theory of evolution.

Later on in the year 1914, seven eminent scientists were invited in London in a seminar which lasted for 7 days to review the relevance of old science and religion. Their lectures were published in book – shape entitled, **'Science and Religion'**. Their thinking is up to date and more logical. In their opinion, Hackle's materialistic school is antiquated. They ridicule Darwin's theory of evolution too and say, ''and it is just here that religion completed the wonderful story of evolution, gives us the purpose of the universe, and reveals the external energy behind all, not as simply an impersonal infinite energy, which is a non – material something, but reveals the Infinite as a personal god." [Science and Religion, p.68] Vedas direct human beings to evolve from 'Annamaya kosha' [sensual life] to 'Anandamaya kosha' [liberation from the cycle of deaths and rebirths] and attain the highest enlightenment or 'Moksha'.

Material science deals with the study of matter and its properties, as well as the discovery of new materials. Material Science involves characterization of the physical and chemical properties of solid materials – metals and alloys, ceramics etc. It is a specific field of science, engineering & technology and its popularity is increasing day by day. Material science is interdisciplinary – a combination of mechanical, chemical, biomedical, civil, electrical and aerospace engineering, physics and chemistry. Its field of study is very wider – from macro to the atomic scale. Historically, materials have been so important that different eras were named as Stone Age, Bronze Age and Iron Age.

The origin of material science can well be traced in Vedas. All metals that are known to humans now, are all described in Vedas e.g. lead, gold, silver, iron, brass etc. (Yajur Veda 18è13). Vedas indicated gold as the most precious metal out of all. **"Hiranmayen patren satyasyapi hitam mukham."** Vedas specify magnetic materials and that magnet attracts iron. Preperation, technique and usage of ther mometer and barometer is specified in Vedas. Also the vedic literates and Rishi – Munis knew how to use sun, water and soil [sand] for measurement of time. The wonders of science like heavy ships flooting in sea and aeroplanes flying in air, which no more look like a wonder, Vedas have described methods for preparation of these by use of combination of metals and material. Vedas have knowledge on making utensils, arms and other things from metals like vehicles, equipments for farming, fighting etc. Vedas have knowledge on all day to day needed things for a common man & for a king. Fire & water which exists in all components are very well understood and explained in Vedas. When water is extracted from any substance by heating, it is burnt. Vedas also define that matter can't be created or destroyed, it just changes form. When coal burns, it turns to ashes, releases energy and matter changes form. The modern scientists call it **'Law of conservation of matter'**. All known human inventions are actually discoveries from Vedas. Vedas have wider knowledge than all existing inventions. Extraction of solar, wind and water power to prepare & operate many devices are described in Vedas. There are yet many theories, substances, equipments, principles etc. to be discovered from Vedas. Upcoming generations can do many more wonderful scientific inventions for betterment of human life through learning & reading Vedas.

The origin of spiritual science is 'Veda'. Spiritual science deals with the philosophical aspects of Brahman [the Creator or Supreme God], Atman [The individual soul] & Jagat [the Universe or the Creation]. All three are immortal and exist from the very beginning of the universe. Brahman is the Supreme Authority. It is changeless, omnipresent, pure consciousness, the divine of divines, the light of lights, the fountain of sweetness, immortal, all – pervading, existing, intelligent, blissful, protector of the whole universe and His personal name is 'OM'. He is the creator of Universe, the Supreme Lord and none can describe Him completely.

AtmanèAtma is the inner individual soul. It is 'immutable, eternal, indestructible, the essence of an individual', consciousness; but its knowledge & powers are limited. The ultimate aim of Atmam is to attain "Moksha **"[liberation from the cycle of deaths and rebirths].** AtmanèJiva exihsts with a body & senses. Jiva is free to do good or bad deeds [karmas], but it has to experience happiness or pain according to its actions. As per the theory of incarnation, with the death of body, Jiva enters into new body as per its right or wrong actions [karmas]. With true knowledge, good deeds & zero balance of karmas 'Atma' can achieve the ultimate goal of human life.

Jagat [universe] means ever changing. Everything seen or perceived in universe is momentary & nothing is permanent. In the opinion of Shankaracharya Jagat [universe] is illusion, but according to Swami Dayanand Saraswati it is also true. Mahrishi Dayanand is the exponent of 'Traitavad', which means Supreme God, Atma [soul] & Jagat - all three are immortal, true in essence & exist from the very beginning of the world.

The above concepts of spiritual science described in Vedas, have widely been accepted by religious thinkers of various Schools. No doubt, the thinkers have interpreted 'Atma ' & 'Jagat' or even 'Brahman ' in the light of their own philosophical principles i.e. Advaita, Dvaita, Vishishtadvaita etc., but origin of all philosophies lie in Vedas. In a nut – shell, undoubtedly Vedas are the origin of material as well as spiritual sciences.

B – 3è 79, Janak Puri,
New Delhi - 58
E-mail:drslkathuria@gmail.com

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में 131वां महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म की जिस ज्योति को जलाया वह युगों-युगों तक जलती रहेगी - महाशय धर्मपाल, प्रधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान की - जन. वी.के. सिंह

दिल्ली के समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में महर्षि दयाननन्द सरस्वती जी का 131वाँ निर्वाण दिवस समारोह दिनांक 23 अक्टूबर 2014 को दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में समारोह पूर्वक मनाया गया। यह समारोह प्रात: 8:00 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। आचार्य डा० ऋषिपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ में मुख्य रूप से महाशय धर्मपाल जी (प्रबन्ध निदेशक एम.डी.एच), श्रीमती वीना व श्री धर्मपाल आर्य (वरिष्ठ उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्रीमती सुधा व श्री अशोक गुप्ता तथा श्रीमती एवं श्री जीवनलाल आर्य ने यजमान के रूप में भाग लिया। यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था आर्य केन्द्रीय सभा के संरक्षक श्री मदनमोहन सलूजा ने की। तत्पश्चात् ध्वजारोहण श्री राजकुमार अग्रवाल (प्रसिद्ध समाज सेवी) के कर कमलों द्वारा किया गया।

ध्वजारोहण की व्यवस्था आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के संचालक श्री जगवीर आर्य सहित अनेक साथियों व आर्य वीरों ने की। तत्पश्चात् 9:30 बजे सार्वजनिक सभा श्रीमती मिथलेश शास्त्री के भजनों के साथ प्रारम्भ हुई। सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा के यशस्वी प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जनरल वी.के. सिंह, माननीय राज्यमन्त्री (भारत सरकार)। विशिष्ठ अतिथि के रूप में आचार्य राज सिंह आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व श्री प्रेम अरोड़ा ने भाग लिया।

इस महासम्मेलन के मुख्य अतिथि '**जनरल वी.के. सिंह,** माननीय राज्य मन्त्री, भारत सरकार ने अपने सम्बोधन में देश और समाज में महर्षि दयानन्द सरस्वती के उत्कृष्ट योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि- महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे निर्भीक संन्यासी थे, जिन्होंने अपने जीवन की परवाह न करते हुए राष्ट्र में धार्मिक चेतना का आगाज किया। हमें कर्त्तव्य पथ पर चलने के लिए एक नया चिन्तन, एक नई दिशा प्रदान की। वह दिशा थी, कर्त्तव्य परायणता की, सत्यता, प्रेम और परोपकार की। महर्षि के ये मन्तव्य मील के पत्थर साबित हुए जिनसे गुजरकर

महर्षि दयानन्द जी के अन्तिम दृश्य को देखकर अश्रुधारा बह निकली आर्यजनों के नेत्रों से

समरोह में उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य एवं मंचस्थ अतिथिगण सर्वश्री विनय आर्य, डॉ. स्वामी देवव्रत, प्रेम अरोड़ा, राजेन्द्र कुमार, जन. वी.के. सिंह, महाशय धर्मपाल, धर्मपाल आर्य, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, रामनाथ सहगल, डॉ. वागीश आचार्य, एवं श्री सुरेन्द्र रैली जी।

निर्वाण दिवस समारोह को सम्बोधित करते जन. वी.के. सिंह, डॉ. वागीश आचार्य एवं स्वामी देवव्रत सरस्वती

देशभर के हजारों लोगों ने देखा संस्कार चैनल पर सीधा प्रसारण

अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान : मुख्य अतिथि जनरल वी.के. सिंह का अभिनन्दन, श्री ईश कुमार नारंग , डॉ. विवेक आर्य, एवं श्री राजेन्द कुमार जी को सम्मानित करते सर्वश्री महाशय धर्मपाल जी, सुरेन्द्र रैली, धर्मपाल आर्य श्रीमती ऊषा किरण आर्या, ब्र. राजसिंह आर्य, कीर्ति शर्मा एवं डॉ. मुमुक्षु आर्य

- जारी पृष्ठ 5-6 पर

पृष्ठ 4 का शेष

भारत स्वतन्त्रता की कसौटी पर पहुँचा। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही होगी कि हम उनके आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाएँ और ऐसे ही ईमानदार, कर्त्तव्य निष्ठ नेता राजनीति में होंगे तो राष्ट्र भी उन्नत होगा।

इस अवसर पर भारतीय संसद में पहुंचने पर जन. वी.के. सिंह को दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से माल्यार्पण, शाल ओढ़ाकर एवं अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सम्मेलन के मुख्य वक्ता डा. वागीश आचार्य जी (मुम्बई) ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन-यज्ञ पर प्रकाश डालते हुए कहाकि- सर्वत्र समाज में महर्षि के बलिदान का प्रभाव दृष्टिपात हो रहा है। महर्षि के प्रादुर्भाव के समय अनेक सामाजिक समस्याएँ मुँह फाड़े खड़ी हुई थी- जिनमें स्त्री-शिक्षा एक अद्भुत चिन्तन व प्रयास था। तथा 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' का आदर्श प्रस्तुत किया। बाल-विवाह, सती प्रथा, धार्मिक-क्रिया कलापों में पशु व नर बलि, नारी व शूद्र के लिए वेद पठन-पाठन का निषेध, पूजा पद्धति में विकार और छुआ-छूत आदि की समस्याएँ विकराल रूप ले चुकी थी। महर्षि ने सभी पाखण्डों, अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों का विरोध कर शुद्ध एवं वैदिक परम्पराओं का संचालन आर्य समाज के माध्यम से किया। उन्होंने उत्कृष्ट ग्रन्थ

- शेष पृष्ठ 6 पर

महाशय धर्मपाल जी एवं स्वामी प्रणवानन्द जी नहीं रोक पाए आँसू : बोले हम करेंगे ऋषि के स्वप्नों को पूरा

निर्वाण दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित यज्ञ, ध्वजारोहण, उपस्थित आर्यजनों से भरा पण्डाल एवं प्रस्तुत की गई नाटिका के मनोरम दृश्य

गुरुकुल महाविद्यालय काँगड़ी हरिद्वार में एम.डी.एच. विद्यालय ब्लाक का भव्य उद्घाटन

गुरुकुल महाविद्यालय काँगड़ी हरिद्वार के परिसर में आर्य जगत् के दानवीर महाशय धर्मपाल जी के कर कमलों से एम.डी.एच. भवन का उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यज्ञोपरान्त महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन एम.डी.एच. एवं प्रधान आर्य विद्या सभा गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार) को यज्ञशाला से बैण्ड बाजों के साथ ओ३म् तथा वैदिक जयघोष के स्वरों से फूलों की वर्षा करते हुए एम.डी.एच. भवन उद्घाटन स्थल तक लेकर आए। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं आर्य समाज के बाहर से आये लगभग 400 सदस्यों एवं पदाधिकारियों की उपस्थिति में प्रातः 9:30 बजे से आश्रम के उपरि-मंजिल के उत्तर भाग एवं दक्षिण भाग के दोनों ब्लॉकों का उद्घाटन किया। तत्पश्चात् विद्यालय के भण्डार भवन एवं एक अन्य भवन का उद्घाटन और उनके बाद एक नवविद्यालय भवन का शिलान्यास भी किया। गुरुकुल महाविद्यालय परिसर में उद्घाटन एवं शिलान्यास कार्यों से उत्साहित होते हुए महाशय जी ने हृदय उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि अब पाँच भवनों के निर्माण हेतु मेरे नाम से पांच पत्थर अंकित हो चुके हैं। जो पंच परमेश्वर की उक्ति को सिद्ध करता है। जो महाविद्यालय की उन्नति एवं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में एक साधन का काम करेगा। इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने कहा क इन भवनों के निर्माण से गुरुकुल के विद्यार्थियों को अध्ययन में सुविधा तथा संख्या और गुणवत्ता में वृद्धि होगी। सायं कालीन सत्र में महाशय जी ने फार्मेसी के 150 डीलरों

- शेष पृष्ठ 6 पर

महाशय धर्मपाल जी के गुरुकुल कांगड़ी पहुंचने पर एन.सी.सी. कैडेटों द्वारा सम्मान एवं तिलक द्वारा स्वागत। नव निर्मित भवनों का रिबन काटकर एवं नामपट्टिका का अनावरण करके लोकार्पण करते महाशय धर्मपाल जी एवं एम.डी. एच. परिवार के सदस्य। साथ में गुरुकुल कांगड़ी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारीगण।

आर्यसमाज की मान्यताओं के विपरीत कथा हेतु सभागार प्रयोग करने की अनुमति दिए जाने के कारण

आर्यसमाज डेरावाल नगर की कार्यकारिणी निलम्बित : नोटिस जारी

सभा को जानकारी मिलने पर कि आपकी समाज डेरावाल नगर द्वारा भागवत कथा आदि आयोजित करने के लिए किसी सज्जन को जगह दी गई है। सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री जी ने इस सम्बन्ध में आर्यसमाज के अधिकारियों से फोन पर चर्चा की तथा जानकारी मांगी गई थी एवं अधिकारियों द्वारा स्थिति बताए जाने पर इसके आयोजन को रोकने के सन्दर्भ में कहा गया था। किन्तु आर्यसमाज की ओर से इस पर त्वरित कार्यवाही नहीं की गई। तदुपरान्त सभा द्वारा एक पत्र दिनांक 27 अक्तूबर को तथा स्पीड पोस्ट 29 अक्तूबर, 2014 को भेजा जिसमें द्वारा इसे तत्काल प्रभाव से रोकने सम्बधी निर्देश जारी किया गया था। सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी स्वयं आर्य समाज पहुंचकर कार्यक्रम को तत्काल रुकवाने/ स्थान परिवर्तन करने के सम्बन्ध में निर्देश दिए। किन्तु आर्यसमाज की ओर से इस पर कोई कार्यवाही न किए जाने पर सभा की अत्यावश्यक बैठक 3 नवम्बर, 2014 में आर्यसमाज डेरावाल नगर की कार्यकारिणी को निलम्बित कर दिया गया।

पृष्ठ 5 का शेष

131वां महर्षि दयानन्द निर्वाण ...

'सत्यार्थ-प्रकाश' पारसमणि के रूप में समाज को प्रदान किया जिसके स्पर्श मात्र से देश के दीवानों ने राष्ट्र आहुति में अपना दायित्व ही नहीं निभाया एक ही झटके में देश को स्वतन्त्र भी करा लिया और एक नए युग का प्रवर्तन हुआ, जिसके मूल में महर्षि का बलिदान और निर्देशन शरीर में रक्त की भांति प्रवाहित हो रहा है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य जी ने महर्षि के कार्यों एवं शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने तथा संस्कृत शैक्षणिक संस्थाएँ खोलने की प्रेरणा दी जिससे वैदिक ज्ञान का सर्वत्र प्रचार एवं प्रसार हो।

महासम्मेलन के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी आर्य (एम.डी.एच.) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि- जब सम्पूर्ण राष्ट्र गुलामी की त्रासदी को भुगत रहा था, अज्ञान, अन्धविश्वास और पाखण्ड सर्वत्र पैर फैलाए हुए था, अनीति और अत्याचार में संस्कृति और सभ्यता दम तोड़ रही थी तथा विदेशी कुशासन देश वासियों का रक्त पी पीकर बलिष्ठ हो रहा था। ऐसे भीषण काल में महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने समाज सुधार और नव जागरण का मन्त्र इस भोली जनता के कान में फूंका तो इस आर्य जाति में चेतना लौट आयी और उत्थान के प्रयत्न करने लगी। ऋषिवर ने अविद्या अज्ञान का नाश कर विद्या और ज्ञान की ज्योत जलाई। वह ज्योत, तेल व घृत से नहीं वह ज्योत उन्होंने अपने रक्त से जलाई जो युगों-युगों तक जलती रहेगी और यह राष्ट्र उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

इस शुभ अवसर पर आर्य समाज के विभिन्न कार्यों में विशिष्ट सेवा प्रदान करने हेतु विद्वानों को पुरस्कारों से अलंकृत किया गया जिसमें **डॉ० विवेक आर्य** रोहिणी दिल्ली, को लेखन कार्य के माध्यम से उत्कृष्ट योगदान देने के कारण **'स्वामी विद्यानन्द सरस्ती वैदिक विद्वान् पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया। **श्री ईश नारंग** मन्त्री गुरूकुल दयानन्द विहार, को **'शहीद अश्विनी कण्व स्मृति पुरस्कार'** तथा **श्री राजेन्द्र कुमार** (एम.डी.एच.) को आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता के रुप में **'डॉ. मुमुक्ष आर्य पं. गुरुदत्त विद्यार्थी स्मृति पुरस्कार'** से अलंकृत किया गया। इन सभी को आर्य समाज के उत्थान में एवं प्रचार-प्रसार में विशेष भूमिका वहन करने के कारण उपरोक्त पुरस्कारों से विभूषित किया गया। जिससे आर्य समाज को और भी ऐसे अहर्निश परोपकार करने वाले कार्यकर्त्ता मिलें और समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा प्राप्त हो, महर्षि के स्वप्न साकार हो, सुन्दर और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण हो। यही महर्षि दयानन्द के लिए सच्ची भक्ति और सेवा होगी। सम्मेलन के अन्त में एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने महर्षि दयानन्द के निर्वाण पर प्रेरक नाटिका प्रस्तुत की जिससे महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच) एवं आर्य जन इतने भावुक हो गए कि- अश्रुधारा बह निकली। अन्त में शान्ति-पाठ और जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की पूरी वीडियो यज्ञ, उद्बोधन एवं नाटिका आदि www.youtube.com/user/thearyasamaj/videos पर देखी जा सकती है।

आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली-51 का

वेद प्रचार सप्ताह

17-23 अक्तूबर, 2014

प्रभात फेरी - 16 नवम्बर, प्रात: 6 बजे
यज्ञ : प्रात: 7 से 8:15 बजे
ब्रह्मा : पं. उदयभानु शास्त्री
प्रवचन : डॉ. ओमदत्त आचार्य
भजन : पं. सन्दीप आर्य
भजन-प्रवचन - सायं 7:30-9:30 बजे
महिला सम्मेलन - 20 नवम्बर
पूर्णाहुति एवं समापन : 23 नवम्बर
वक्ता : आचार्य कर्ण सिंह जी
वि. अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य एवं श्री राजीव आर्य

- राजकुमार शर्मा, मन्त्री

आर्यसमाज टैगोर गार्डन ए.सी. ब्लाक का

48वाँ वार्षिकोत्सव

समापन समारोह- 16 नवम्बर 2014
वेद सम्मेलन- प्रात: 10 से 1 बजे तक
अध्यक्ष - श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा
मुख्य वक्ता -आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय
भजन संगीत- श्री जगत वर्मा
अतिथि- श्री धर्मपाल आर्य (व.उ.प.)
श्री विनय आर्य (महामन्त्री)

- जे०एन० मल्होत्रा, मन्त्री

आर्यसमाज जवाहर नगर, पलवल का

59वाँ वार्षिकोत्सव

19 नवम्बर-प्रात: यज्ञ एवं ध्वजारोहण।
20 नवम्बर - महिला सम्मेलन
23 नवम्बर-गायत्री महायज्ञ पूर्णाहुति
ब्रह्मा- स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
मुख्य वक्ता-डॉ० देवव्रत आचार्य
भजनोपदेशक-श्री ओमप्रकाश शास्त्री
मु.अतिथि- आ. विजयपाल, प्रधान (हरि सभा)

- जय प्रकाश आर्य, प्रधान

पृष्ठ 5 का शेष

गुरुकुल महाविद्यालय काँगड़ी ....

के साथ बैठक की तथा गुरुकुल फार्मेसी की उपयोगिता एवं उसके उत्थान के हित महाशय जी ने डीलर्स को अनेक सुझाव दिए और फार्मेसी की स्थिति का जायजा लिया। इस समारोह में अनेक प्रसिद्ध विद्वान् एवं महानुभावों ने अपनी उपस्थिति से समारोह को अलंकृत किया। जिसमें सर्वश्री डॉ० सुरेन्द्र कुमार, कुलपति, आर्य विद्या सभा गुरुकुल काँगड़ी के समस्त पदाधिकारीगण सर्वश्री धर्मपाल आर्य (कोषाध्यक्ष), प्रो० ओमकार जी (मन्त्री), विनय आर्य (उपमन्त्री), आचार्य यशपाल (मुख्यधिष्ठाता), जय प्रकाश विद्यालंकार (सहायक मुख्याधिष्ठाता), डा० जसवीर मलिक (सम्पदा अधिकारी) तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्रीमान् आचार्य विजयपाल जी, मन्त्री मा० रामपाल दहिया पूर्व मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री एवं श्री वी.के. शर्मा (रजिस्ट्रार) आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे। सभी उपस्थित महानुभावों ने महाशय जी के इस महान कार्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रथम पृष्ठ का शेष

माता प्रेमलता शास्त्री जी का .....

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ रूपी पौधे को कभी नागालैण्ड में लगाया गया था आज वही पौधा आपके महामन्त्री पद के कार्यो से झारखण्ड, असम, म.प्र, छत्तीस गढ़,राजस्थान आदि राज्यों में पुष्पित एवं पल्लवित हो विशाल वटवृक्ष का रूप लेकर फैल चुकी है। जिस वटवृक्ष के नीचे आज सैकड़ों विद्यार्थी विद्या लाभ लेने के साथ कुटीर उद्योग, सिंचाई, सिलाई, कृषि तथा आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

रविवार 2 नवम्बर 2014 को सम्पूर्ण आर्यजगत् में मृत्यु की सूचना से शोकाकुल वातावरण बन गया था। तत्पश्चात सभी सेवाश्रम संघ का परिवार आर्यनेता,आर्य कार्यकर्ता, राजनेता तथा छात्र-छात्राएं शान्ति देवी आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, दिल्ली में माता जी के अन्तिम दर्शन करने हेतु पहुँच गए। उसके बाद शान्ति देवी आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, दिल्ली से शवयात्रा आरम्भ होकर महर्षि दयानन्द चौक रानी बाग से होते हुए आर्य समाज रानी बाग एवं मेन बाजार रानी बाग होते हुए आर्य समाज रेलवे रोड, शकुरबस्ती में हजारों नर-नारी श्रद्धालुओं की उपस्थिति में उनका पंच भौतिक शरीर दधीचि देहदान समिति आर्मी मेडिकल कॉलेज में देहदान कर दिया गया।

मंगलवार 4 नवम्बर 2014 को बाबा नत्थासिंह वाटिका, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली के शोकसभा में श्रद्धांजलि देने हेतु गुरुकुल संस्कृति के संवाहक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, महाशय धर्मपाल जी, कॅप्टन रूदसेन जी, डा. योगानन्द शास्त्री जी, डा. महेश विद्यालंकार, राष्ट्रीय आर्य कवि डा. सारस्वत मोहन मनीषि जी, आचार्य चन्द्रशेखर शाास्त्री जी, आचार्य नरेन्द्र मैत्रेयी जी, आचार्य शिवनारायण शास्त्री जी, पूर्व विधायक श्यामलाल गर्ग जी, पूर्व विधायक एस.सी. वत्स जी, विधायक सत्येन्द्र जैन जी, निगम पार्षद देवराज अरोड़ा जी, कमल कान्त शर्मा, सुदेश भसीन, शशिदत्त जेटली, रमेश अग्रवाल, मनोज आनन्द, सुरेन्द्र गुप्ता, सुनिल गुप्ता, धर्मपाल गुप्ता, माता ईश्वर रानी महता, उषा किरण कथूरिया, अंजना चावला सहित प्रसिद्ध उद्योगपतियों, सार्वदेशिक सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज रानी बाग, आर्यसमाज रेलवे रोड शकूरबस्ती, आर्यसमाज सैनिक विहार तथा दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारी, दिल्ली आर्य वीर दल के आर्य वीर एवं वीरांगनाएं, समस्त आर्य विद्यालयों के पदाधिकारी तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित होकर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी।इस अवसर पर शान्ति यज्ञ का आयोजन आचार्य जीववर्धन शास्त्री जी, आचार्य रामनिवास शास्त्री जी, आचार्य आनन्द प्रकाश आर्य जी, आचार्य राजेन्द्र वर्णी जी, आचार्य संतोष कुमार आर्य जी, श्री राजु शास्त्री जी के संयुक्त ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

प्रेरणा सभा का संचालन संयुक्त रूप से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं आर्य समाज रानी बाग के प्रधान श्री जोगेन्द्र खट्टर जी ने की। उपस्थितजनों का अभार माता प्रेमलता जी के सुपुत्र श्री विनोद खन्ना एवं पौत्र राहुल खन्ना जी ने किया।

आर्यसमाज अमरोहा के 113वें उत्सव पर

विश्व-शान्ति यज्ञ

16 से 18 नवम्बर 2014
महिला सम्मेलन : 17 नवम्बर, 2014
18 नवम्बर 2014 समापन समारोह

- राजनाथ गोयल, मन्त्री

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के
92वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर

यजुर्वेदीय यज्ञ, भजन एवं प्रवचन

पूर्णाहुति : समापन एवं विशेष प्रवचन : 16 नवमबर, 2014

ब्रह्मा : स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती (बरेली) ऋत्विक : डॉ. कर्णदेव शास्त्री
वेदपाठ : गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी भजन : श्री रामनिवास शास्त्री

मुख्य वक्ता : स्वामी ब्रह्मानन्द - 'सुख की तलाश में भटकता इंसान'
आचार्य श्यामदेव - 'मानव मात्र का धर्म एक ही है'
आचार्य वीरेन्द्र विक्रम - 'माता-पिता और सन्तान का परस्पर दायित्व'
डॉ. अन्नपूर्णा - 'धर्म एवं अधर्म पर महर्षि दयानन्द की चिन्ता'

अधिकाधिक आर्यजन पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें। - ***दयानन्द यादव, मन्त्री***

आर्यसमाज बिड़ला लाइन, दिल्ली का
85वाँ वार्षिकोत्सव
पूर्णाहुति एवं समापन : 16 नवम्बर

प्रात: 9:30 से दोपहर 1:30 बजे
अध्यक्षता : श्री धर्मपाल गुप्ता
भजन - पं० नरदेव जी (भरतपुर)
मुख्य अतिथि : श्री अरविन्द गर्ग
वि.अतिथि : श्री विनय आर्य
वक्तागण : डॉ. जयेन्द्र शास्त्री
श्री धर्मपाल आर्य

- योगेश कुमार आर्य, प्रधान

अथर्ववेद पारायण यज्ञ
17 से 23 नवम्बर 2014

स्थान : 7 लक्ष्मी एवेन्यू, मोहन मिल्स के सामने, बाहर गेट भगतांवाला (अमृतसर)
समय : प्रात: 8 से 10 बजे
सायं 3:30 से 5:30 बजे

-: निवेदक :-
श्रीमती किरण एवं दिनेश आर्य

सर्व धर्म सम्मेलन में वैदिक सिद्धान्तों की गूँज

सिंधी संत कंवरराम जी के 75वें अमृत महोत्सव के अवसर पर सिंधी समाज कोटा द्वारा सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न धर्म एवं पन्थों के 30 से भी अधिक धर्माचार्यों एवं विद्वानों को आमंत्रित किया गया। आर्य समाज का प्रतिनिधित्व युवा वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि- सम्यक् ज्ञान से ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है, विद्या और अविद्या के स्वरूप को जानकर विद्या से अमृतस्वरूप परमात्मा को जानना चाहिए।

कार्यक्रम के संयोजक गिरधारी लाल पंजवानी ने उपस्थित धर्माचार्यों एवं विद्वानों का सम्मान किया तथा सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अर्जुनदास दयानी ने किया।

- राम प्रसाद याज्ञिक,
पूर्व उप प्रधान, जिला सभा

फ्री हैल्थ कैम्प लगवाएं

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में आर्य समाज एवं आर्य संस्थाओं में फ्री हेल्थ कैम्प लगाने के लिए श्री विजय दीक्षित जी से सम्पर्क कर सुविधा का लाभ जन सामान्य तक पहुँचाने का महान कार्य करें। सम्पर्क करें -

विजय दीक्षित
9868787522, 9213499532

आर्यसमाज एल. ब्लाक आनन्द विहार हरि नगर, नई दिल्ली-64 का
39वाँ वार्षिकोत्सव
समापन एवं आर्य सम्मेलन 16 नवम्बर

प्रात: 7 से दोपहर 1:30 बजे
अध्यक्षता : श्री शिव कुमार मदान
वक्ता : डॉ. अजीत कुमार एवं
श्री योगेन्द्र शास्त्री
विषय : नव जागरण और आर्यसमाज
भजन - श्री देव आर्य

- महेन्द्र सिंह, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मुम्बई (काकड़वाडी)
वी.पी. मार्ग, मुम्बई

प्रधान- श्री देशबन्धु शर्मा
मन्त्री - श्री विजय गौतम
कोषाध्यक्ष- श्री किशनलाल महाजन

स्त्री आर्यसमाज सिविल लाइन्स
रामघाट, अलीगढ़ (उ.प्र.)

प्रधान- श्रीमती दर्शनदेवी भारद्वाज
मन्त्री - श्रीमती ऊषा गर्ग
कोषाध्यक्ष- श्रीमती डॉ. कमला कुमार

वार्षिकोत्सव एवं शौर्य पर्व विजय दशमी सम्पन्न

आर्य समाज वैदिक आश्रम रामघाट मार्ग अलीगढ़ का राष्ट्रीय शौर्य पर्व विजय दशमी पर आयोजित वार्षिकोत्सव 3 से 6 अक्टूबर 2014 सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में तीनों ही वर्ग तथा बाल, युवा व वृद्ध, महिला एवं पुरुषों ने समान रूप से बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

- डॉ. पपेन्द्र आर्य, मन्त्री

चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्ष गुरुकुल आमसेना में 7 अक्तूबर को विजयादशमी के अवसर पर युवा चरित्र निर्माण एवं आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का शुभारम्भ नुआपड़ा जिले के यशस्वी विधायक श्री बसंत भाई पण्डा ने ओ३म् ध्वजोत्तोलन से किया। शिविर मे छत्तीसगढ़, ओड़िशा से 200 आर्यवीरों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। समापन समारोह - गुरुकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

खेद व्यक्त : पाठकों की सूचनार्थ है कि साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक दिनांक 3 से 9 नवम्बर, 2014 गुरु पूर्णिमा के अवसर पर प्रैस अवकाश के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। **- सम्पादक**

आर्यसमाज पूर्वी पंजाबी बाग के
25वे वार्षिकोत्सव पर
वेदकथा
पूर्णाहुति वं आर्य सम्मेलन : 16 नवम्बर

प्रात: 7:30 से 1:30 बजे
ब्रह्मा - डा० रामपाल विद्याभास्कर
भजन- श्री अंकित उपाध्याय शास्त्री
प्रवचन : डॉ. रामपाल विद्याभास्कर
डॉ. महेश विद्यालंकार
'आर्यसमाज का समाज सुधार में योगदान'
अतिथि : श्री विनय आर्य, दि.आ.प्र. सभा

- रवि चड्ढ़ा, मन्त्री

आर्यसमाज अशोक विहार -1 के
41वाँ वार्षिकोत्सव
समापन समारोह : 16 नवम्बर

यज्ञ पूर्णाहुति : प्रात: 7:15 से 9:15 बजे
ब्रह्मा - आचार्य सत्यप्रकाश जी
संगीत- आचार्य श्रुति भास्कर

वैदिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता
वेद सम्मेलन -प्रात:11:45 बजे से
अध्यक्षता : श्री रविन्द मित्तल जी
वि. अतिथि : श्री विनय आर्य (महामन्त्री)

- जीवन लाल आर्य, मन्त्री

वेद व्यास डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, विकास पुरी, नई दिल्ली द्वारा
वैदिक ज्ञानार्जन एवं संस्कार यात्रा

डी.ए.वी. प्रबंधन समिति के यशस्वी प्रधान 'श्री पूनम सूरी जी' की प्रेरणा तथा डॉ० निशा पेशिन जी, निदेशिका डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के मार्ग दर्शन एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रिं० चित्रा नाकरा जी की अध्यक्षता में तथा नीरज ज्योति जी के संयोजकत्व में वेद व्यास डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, विकास पुरी, नई दिल्ली के 27 प्रतिभा सम्पन्न छात्रों ने 27 सितम्बर से अपने विद्वान् आचार्यों के सानिध्य में 'वैदिक ज्ञानार्जन एवं संस्कार यात्रा से अपनी संस्कृति, संस्कारों एवं मूल्यों से जुड़ने का गहराई से प्रयास किया। इस संस्कार यात्रा ने दिल्ली से चलकर अपना केन्द्र हरिद्वार स्थित तप पूत 'वैदिक मोहन आश्रम' को बनाया, ऋषिवर दयानन्द जी की विचार एवं तपोभूमि (पाखंड खंडिनी पताका) को देख कर तथा ऋषिवर की क्रान्तिकारी जीवन कथा को सुनकर छात्रगण भाव विभोर हो गए। हरिद्वार स्थित पावन धाम, सप्तऋषि, शांतिकुंज योगपीठ तथा आचार्यकुलम् को निकट से देखा। शांति कुञ्ज में छात्रों ने वैदिक साहित्य एवं संस्कृति के अवलोकन के साथ-साथ ध्यान-अभ्यास भी किया। 1 अक्टुबर 2014 को इस यात्रा का समापन हुआ। लेकिन इस यात्रा से अर्जित ज्ञान-विज्ञान जीवन जीने की कला की महक छात्रों के मन मस्तिष्क को शिव संकल्पों की सुगंध से भरकर दिव्य संस्कारों की प्रेरणा सदा देती रहेगी। ***- प्रधानाचार्या***

शोक समाचार

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. उमाकान्त उपाध्याय का निधन

आर्य समाज कोलकाता के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता तथा अपने सम्पूर्ण जीवन में महर्षि के मन्तव्यों का प्रचार-प्रसार करने वाले श्रद्धेय उमाकान्त उपाध्याय जी का 2 नवम्बर 2014 को लम्बी बीमारी के उपरान्त उनके निवास स्थान पर निधन हो गया। वे 87 वर्ष के थे। वे अपने पीछे पत्नी, एक पुत्र और चार पुत्रियाँ का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से नीमतल्ला शमशान घाट पर किया गया जिसमें कोलकाता के समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने सम्मिलित होकर विदाई दी।

उनकी स्मृति 4 नवम्बर को यज्ञोपरान्त शोक सभा आयोजित हुई इसमें श्री पं. आत्मानन्द शास्त्री, देवव्रत तिवारी श्रीमती अर्चना शास्त्री, योगेश शास्त्री, एवं वेदभानु जी शास्त्री आदि विद्वान् महानुभावों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री विद्यामित्र ठुकराल जी को भ्रातृ शोक

आर्य केन्दीय सभा दिल्ली के संरक्षक, दिल्ली सभा के अन्तरंग सदस्य एवं आर्यसमज ग्रीन पार्क के वरिष्ठ अधिकारी श्री विद्यामित्र ठुकराल जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री विश्वामित्र ठुकराल जी का 9 नवम्बर 2014 को लगभग एक वर्ष की अस्वस्थता के बाद 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे आर्यसमाज सफदरगंज एन्कलेव के कर्मठ कार्यकर्ता थे। गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों ने लोदी रोड दयानन्द घाट पर वैदिक मन्त्रोंचारण द्वारा अन्त्येष्टिकर्म कराया।

उनकी स्मृति में 11 नवम्बर को आर्यसमाज ग्रीन पार्क में शान्ति सभा का आयोजन हुआ जिसमें सभा महामन्त्री विनय आर्य, मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा सहित आस-पास की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 10 नवम्बर से रविवार 16 नवम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2012-13-14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13/14 नवम्बर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012-14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 अक्तूबर, 2014

पृष्ठ 2 का शेष

ईश्वर सत्य स्वरूप है ....

राख हो जायेगी और थोड़ी सी दूर हो जाये तो पृथ्वी बर्फ बन जायेगी। सूर्य की किरणें पृथ्वी पर सीधी पड़े तो जीना दूभर हो जायेगा। ईश्वर की व्यवस्थानुसार इसमें सुरक्षा किरणें ओज परत रहती हैं। पृथ्वी का व्यास 700 मील है। पर्वतों की ऊँचाई 511 मील है। समुद्र की गहराई 9 मील है। 3/4 संसार में जल ही जल है। सृष्टि का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से कार्य कर रहा है। इसमें जरा सा भी व्यावध्यान आ जाए तो विराट् ब्रह्माण्ड का अस्तित्व एक क्षण में समाप्त हो जायेगा और एक कण के विस्फोट से अनन्त प्रकृति में आग लग सकती है।

सर्वाधिक चमकने वाले तारों की संख्या 20 है। इसमें व्याघ नाम का तारा सबसे सर्वाधिक दीप्तमान है। सूर्य की तुलना में यह तारा 21 गुना अधिक है। सूर्य का तापमान 2310 डिग्री फारेनहाइट है और पृथ्वी का तापमान 110 डिग्री है।

पृथ्वी के ऊपर अयन मण्डल की पट्टियाँ हैं, जिन्हें आईलेग स्पीयर कहा जाता है। यदि ये पट्टियाँ न हो तो पृथ्वी जल कर राख हो जाए। यह सारी व्यवस्था ईश्वर ने की हुई है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 1 वर्ष में पूर्ण करती है और उसकी गति प्रति घन्टा एक लाख नौ सौ निन्यानबे मील होती है। सौर मण्डल का व्यास 1 शंख 18 खरब किलोमीटर है। समूचे मण्डल को सम्भालना सूर्य का काम है और सम्पूर्ण सौर मण्डल बिना टकराये सहायता करते हैं, समूचा ब्रह्माण्ड कितना बड़ा है, इसका रचियता केवल ईश्वर है। ईश्वर के अनन्त गुणवाचक नाम हैं, जैसे निराकार, गणपति, देव, लक्ष्मी, सरस्वती, निर्गुण, सगुण, ब्रह्म, सत्य आनन्द, यम-काल, शंकर, महादेव, शिव आदि अनन्त नाम हैं। सृष्टि प्रारम्भ में ये सारे नाम वेदों से लेकर देवी देवताओं के नाम रखे गये हैं।

संसार के सभी मत ईश्वर की रचनाओं को तो मानते हैं, किन्तु ईश्वर के स्वरूप को नहीं जानते। ईश्वर की जगह देवी देवताओं को ही ईश्वर मानते हैं और ईश्वर भक्ति से बहुत दूर हो जाते हैं।

केवल आर्य समाज ही ऐसा धार्मिक संगठन है जो सच्चे रूप में ईश्वर को मानता है। अत: युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को मैं शत्-शत् नमन करता हूँ।

– **पं० उम्मेद सिंह विशारद्**
मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)

प्रतिष्ठा में,

कैलेण्डर वर्ष 2015

मूल्य 1000/-रुपये सैंकड़ा

सम्पर्क करें - 09540040339

महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार

नगर निगम कोटा के तत्त्वावधान में चल रहे 'राष्ट्रीय मेला दशहरा' कोटा-2014 के धार्मिक प्रदर्शनी वर्ग में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए आर्य समाज कोटा की महर्षि दयानन्द जीवन दर्शन एवं

वैदिक साहित्य प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समिति के मन्त्री प्रभू सिंह कुशवाह ने यह जानकारी देते हुए कहा कि- ऐसे श्रेष्ठ कार्यों से प्रेरणा लेकर समस्त आर्य समाजों को वेद प्रचार-प्रसार के ऐसे कार्यों का आयोजन स्वतन्त्र रूप से करना योग्य है।

– *प्रभू सिंह कुशवाह, मन्त्री*

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह